



श्रीगणेशाय नमः॥ कमनिका संग्रहः॥ कृपांगुरुगुरुमामने स्नात्वाचार्यस्नात्वा च गो१० तय
 मोदं२ शुकि१ दामस्तु तत्त्वस्तु गवच धने गो य दाम त य ता॥ गुरुमण्डलाच्च न या य॥ मंत्रदानह
 थुकु॥ कृपालिवा य के गुरुगुरु या॥ यजमान या स्नाच मन॥ सूर्यार्घ्य॥ ॥ अथादि॥ अस्मिन्
 पादार्घ्यकर्मकर्तुं श्रीसूर्ययश्वर्धनमः पुष्पं नमः॥ कपरा सगुरुगुरु या तु ती सत्त्व पोल श्रुः
 र्घविये॥ चन्दन पुष्पाक्षत ताने॥ श्रीगुरुनाथायार्घ्यं नमः॥ चन्दनाक्षत पुष्पं नमः॥ खोबूसा
 नतु तिस्रु ये॥ चरणोदक काय चरण सजो क पु ये॥ धुगुका थर्न दीक्षा का यिजु क स्य न या
 य॥ सूर्यार्घ्यज क मुमाल॥ जो ना गुरु छि श्रं गु छ क १ धोति पु १ श्रीगुरुगुरु आचार्य ने स्ना सं विये

धते यजमान न विये॥ परशेष दीक्षा का यि पु नि से न गु १ जो ना क १ अंगु छ॥ श्रीगुरुगुरुः
 वाय्य ने स्ना स्नां विये॥ धते धुन गव शिष्य पुं जो लं फेरु के॥ ह व ने श्रु त्र मंत्र न ना खं हा य
 के॥ नासा चूर्न हा य के॥ मधु के टन मे दे न भरिता सिव सुं धरा॥ तद्दोष परिहाराय सिं
 वामि गंध वारिणा॥ जओ ला हात को थै वा थिले॥ संवत्ता स्र न॥ ख व ला हात क थै॥ उ
 वा थिले॥ सप्त हा र शो धन मंत्र न॥ दधु सदि ये॥ सिंघाल ह॥ ल स चन्दन सिंहर त या ला हा
 त सि ये॥ कपरा स॥ पे कु न लात का वा थिला त या गु लिस पौ ता स न ची य॥ प्य वा ख द य के॥
 धुधु वा ख सत्त्व चा क॥ धं पिथु हा वा क॥ धं पिथु या वा क॥ धं पिथु जि वा क॥ वा क पतिं सिंघा ह
 सत य॥ चन्दन सिंहर कि गो त्वां त य॥ धि की स पू जा या त के॥ प्रथमं दधु॥ त व सि व स्त्र जो ना ख

वम्बश्चालधनेतये॥ पूजायाय॥ श्रीनाथाय नमः॥ श्रीसिद्धिनाथाय नमः॥ श्रीशेषनाथाय नमः॥ श्रीलोकेश्वराय नमः॥ श्रीवःलोकाय नमः॥ श्रीलोकेश्वराय नमः॥ श्रीधनेश्वराय नमः॥ श्रीजिवाकसपूजा॥ इन्द्राय नमः॥ अग्नये नमः॥ यमाय नमः॥ नैऋत्याय नमः॥ वरुणाय नमः॥ वायवे नमः॥ कुवेश्याय नमः॥ ईशानाय नमः॥ अन्नाय नमः॥ ब्रह्मणे नमः॥ व्यावाकसपूजा॥ ब्रह्माण्यादि॥ ७॥ इन्द्रवाकसपूजा॥ गगानन्ददेवपादुकां पूजयामि नमः॥ भुवनानन्ददेवपादुकां पू० पवनानन्ददेवपादुकां पू०॥ ज्ञानानन्ददेवपादुकां पू०॥ अमृतानन्ददेवपादुकां पू०॥ दधुसपूजा॥ सिद्धौघादिगुरुपादुकां पू०॥ मानवौघादिगुरुपादुकां पू०॥ दि

न किनं खापायके ॥ गुरुगुननुकायशिष्यपनिसेन द्वार सपणाम यात का न द्वार समि
 जनयाजवतुतिह्वनयादुकायमिसायाववतुतिह्वनयकादुताकाय ॥ भुसवाहुगुन
 कालशाय ॥ किकिर्वादेवत्केतय ॥ ग्वयदाप्रकाय ॥ देवताताहांगपणाम यात के ॥ या
 हां वयायजमाननपुष्यभाजनयातके ॥ वाक्यः ॥ अस्मयजमानयजमानीनांमंत्रपुष्य
 दीक्षासांगतासिद्ध्यर्थं पंचोपचारषोडशोपचारयथाशक्तिपूजांकर्तुं पुष्यभाजनं स
 मर्पयामि ॥ पूजाजये ॥ कृपां न किनस्तापूजालवहाय ॥ परशेषकनिष्ठकृमालवहा
 य ॥ श्रीगुरुताकतलपूजालवहाय ॥ थायथायसंफेत्तुके ॥ ह्यकनयायथेतासतन
 वाय ॥ तायहोले जलपात्रताहापोसंयाय ॥ गुरुगुनद्वारपूजायाय ॥ पदतीसतोय ॥ ॥



कुतुधाः सकलपरिवारस्तं वै यमाल॥ सेवेज्याङ्गतय॥ लिवायगुचोय॥ कपरातयनाखवांसत्र
या॥ लिवायके॥ यजमाननसूर्यार्घ्य॥ योगिनीपुमुखकनिष्ठक्रमनसकल्यं धुनका॥ गुरुयाधुन
का॥ थं व॥ ध्वते धुनकासेवेविये॥ सेवेतुपरमाविद्यासेवेतुपरमाकलाहत्यादियडेये॥ सोमसवि
तसेवेविये॥ क्रमनं फेत्तुके॥ योगिनीपुमुखपंचवलिगणावदुकादिपद्धतिकर्मपूजा॥
नित्यक्रमनं पूजागेलपनिस्थयाय॥ धुलिधुनका॥ द्वाहावाका॥ चतुपूजापद्धतिसौय॥ आ
नरातीतिये॥ चतुपूजाधुन्यवदीयपितायमे॥ सकलस्तंदर्शनविये॥ लुहाफलओहाफ
लछायके॥ हामलविये॥ कृपायोगिनी धं लिपंचवलि॥ धं लि कनिष्ठक्रमणाविये॥ दधुल
खवलाहातसदीयतये॥ वाक्यः पद्धतिस॥ थथं विचरभूरुजलचरकोषरथेनालंधुनका

कालीसमेतं ताभातिभातिगुरुनदुतायने

प्रियां॥ आपदोदुरितं रोगाः समयाचारसंघनात्सर्वाणि मेवाहनु दिव्यचक्रसामेलनात्॥ संपूज
कानांप्रतिपालकानां जितेन्द्रियाणांचतपोधनानां॥ देशसाराधुत्यकुलराजां करोतुशान्तिं भग
वान्मुकुजेशः॥ यासामात्राप्रभावेन सुष्ठितं धुवनत्रयं॥ नमस्तो नमस्तो नमो योगिनीभ्यो नि
रन्नरं॥ नन्दतुसाधककुलान्यणिमादिसिद्धाः शापाः पतन्नुवितयेदिशि योगिनीनां॥ साशोभ
वीस्फुरतुकापिसमाख्यायस्यागुरोश्चरणपंकजमेकमेव॥ नन्दतुसाधकावाय्या नरनृप
योषितः॥ नन्दतुश्रीकुलावाय्यायेवान्येकुलदीक्षिताः॥ देहिनः सुखिनः सख्यसुखासीनं द्रव
तुप्रसादंतुसदाचारं वरणां जीवधारणां॥ वाक्य॥ अस्मिन्नजमानजजमानीनां मंत्रदानसाधनासि
द्धार्थमर्चयन्निदीपयागार्चनचक्रसंपूर्णनिमित्तार्थमस्मयजमानयजमानीनामाधुरै यजना
धनसंततिरुद्धिरस्तु यथाशास्त्रोक्तफलदायी भवतु॥ अनन्तवित्तारविरंतशायि

न्यासः॥ उक्लिष्ट हृदयाय नमः॥ वाणालिनी शिरसे स्वाहा॥ सुमुखी देवी शिखायै वौषट्॥ महापिशाचिनी कवचाय हुँ॥

रेन विनाशहेतौ॥ कस्मिंश्चिदत्रैव च भूतसर्गे विश्वं भूमीरुधराशिवसानं॥ धिधिं आनाकाय॥ पू
र्णहृदि॥ ~~कस्मिंश्चिदत्रैव च भूतसर्गे विश्वं भूमीरुधराशिवसानं॥ धिधिं आनाकाय॥ पू~~
रुनंथाने॥ दुतायने॥ धायसंतय॥ मुडालोपन॥
किंगो॥ ज्वगहाजपावोने॥ प्रवृत्ते भैरवी चक्रे सर्ववर्णादिजातयः॥ निवृत्ते भैरवी चक्रे सर्ववर्णा
ः पृथक् पृथक्॥ धिधिं किंगोताने॥ त्वानककाय॥ वलिविसर्जन॥ देवविसर्जन॥ साक्षि
थाय॥ वीरभोज्य॥ न्यसि यधुन काव॥ विपमुने॥ देने ये जमान यागुशिखायागुयोगिनीया
गुनये॥ देने कलंकवोतये॥ कलंक पूजा॥ आचमन॥ ३॥ अग्निवेकादिवन्दनपुष्पतये॥
सूर्यार्घ्य॥ गुरुनमस्कार॥ जलत्रपूजा॥ आत्मपूजा॥ आरशक्तायासनेभ्यो नमः॥ ध्यान॥
~~उलूकेभ्यो नमः॥ गृध्रेभ्यो नमः॥ काकेभ्यो नमः॥ श्वेभ्यो नमः॥ शिवाभ्यो नमः॥~~
सेनेभ्यो नमः॥ विशलेभ्यो नमः॥ रसशानवासिभ्यो नमः॥ उँ ठँ ढँ उक्लिष्ट वाणालिनी

त्रिशूलभारावाणमुडाकेने ४

सुमुखी देवी महापिशाचिनी ठँ ठँ ठँ स्वाहा॥ ध्वनत्रयांजलिः॥ षडंगः॥ वलिः॥ त्वाकमहावलिन
धुनकेके॥ वृषदीप॥ जपः॥ त्रयांजलियागुलिनंजय॥ १०॥ त्रीत्र॥ त्रिशुद्धिसहितनतर्पण
॥ मा३३ लसंत्वा नककाय॥ कलंकवोतुकाय मूमास॥ न्यासलिकाय॥ संहारमुडानविसर्जन
कलंकनकिनकोय॥ कलंकाभिषेक॥ वातासिलानाखकुपालसख्योलहाय॥ थुलिधु
नको॥ छपोलकलंकयानाखतोने॥ सकलपरिवारसंकाय॥ शेषनाखवाय॥ अखण्डधारयाय
मणल॥ पोत्तासेनस्ववाकत्यांकोय॥ तायहोले॥ किंगोवोडावोकोय॥ मतावियकेजजमानेन॥ पुलि
नदूर्यके॥ तायकिंगोजोनके हाजपावोने॥ क्रियालोपोनकर्तायः कर्मणा वचसागि
रा॥ तैथापि क्षान्यतां मातः प्रमादाद्यदिलुप्यते॥ यदि छिडमछिडं वा कृतं वा पकृतं न

वेत्ता। उनाधिक कृतां पूजां क्षमस्व जगदम्बिके॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनमित्यादि॥ किं गताने
 साष्टांग प्रणामयाय॥ शिवशक्ति तर्पणयातके॥ शक्तिं न सेमता वियौ इतालविये॥ मेसिः
 विये॥ था कालि पुं आनियाय॥ देनवाने॥ सातिकुक्रु सकल परिवारयां नित्य कर्मयाय
 दिखामो पुनि ह्यक न यातके॥ देवयास्या न स दीपयागु शिवशक्ति सेन के घे ल सा खल १०
 ताने॥ ह्याद को सयतां वोति न गत का गो डा विने॥ मता पूजा क्रमणं पूजायाये॥ कलश कु
 मपात्र कौमारी दक्ष संत्रयां जेलि मूल पूजा न धुन के॥ धूप दीप जप स्तुति॥ दक्षिणा छा
 य॥ त्रितय तर्पण॥ शक्ति वोन गु अग्नि छाया॥ पितृ वना॥ शिव वोन गु सोम छाया॥ अष्ट
 विंशति॥ अमृती स वोन गु छाया॥ अविनाशो॥ समय छाया॥ शोधन याय॥ धुन का पिथुस

कौमारी वोय॥ कुंभ या आसन वोय पात्र या आसन वोय॥ कौमारी या हुओ ने अर्घ पात्र तये॥
 कारणातये॥ पद्धति क्रमं कौमारी पूजा॥ अभिषेक वन्दन यज्ञोपवीत पुष्प॥ आवमन २॥ सूया
 र्घ॥ गुरु नमस्कार॥ न्यास द्वात्रिंशाक्षर॥ जल पात्र पूजा तो हायो सं॥ अर्घ पात्र पूजा॥ नूतन
 द्वि॥ आत्म पूजा॥ विलुत्र या॥ त्रिदेव पूजा॥ वलि मुडा॥ तर्पण॥ कौमारी स आसन ताने॥ आ
 धार शक्तीदि॥ महाम पूरा सनायनमः॥ ध्यान॥ त्रयां जलि॥ बुझा एयादि॥ असि तांगादि
 दुधु या माल कत्रयां जलि॥ कौमारी यात्रयां जलि॥ घुं ग॥ त्वाक म हा वलि न धुन के॥ धूपः न कि न ज
 दीय॥ जपः॥ त्रिदेव या॥ कौमारी या॥ धुया मा क॥ जप निवेदन॥ मण्डल स्तुति॥ दक्षिणा
 छाया के॥ मण्डल विसर्जल॥ हा हा वा क कलशाभिषेक देव स्के॥ त्वग ने छाया॥ महनी छे न न त्र या ज ३

छाया॥स्वानककाया॥प्याहोवयानकिंस्तु कुंनलवृद्धावतर्पणयातके॥आसनतये॥पात्रुः
 पिताहये॥आसनसतये॥कलशपिताहये॥कृष्कसिंधुं पिताहये॥नुसज्वलाकृष्कंतये
 कलशयाहाफलत्वां॥जजमानं ज्वनके॥गुरुहायकेस्वयो देवत्वे॥थवकेछपोलहाय
 के॥परशोषगुरुनजनिशेषविये॥शक्तिंनसेचन्दनसोगोनमरुनीपाशुकास्वानविये॥
 जजमानयतातवसितयेस्वांमालपाशुकातयात्वांविये॥सकलस्तांजनकायन्दनादिमा
 शिर्वादत्वांविये॥सुखसर्वेषां॥नकिंनस्तं सिंधुंनविये॥पूसाचेतुनिमंदिव्यं दर्पणंशत्रु
 दर्पणं॥आत्मविश्वं कुर्वयश्चेत्संयदेचजयायच॥कृष्कंस्त्रुयके॥जजमानंस्वतके॥नेक्रया
 य॥प्रथमअण्ड॥द्वितीयमीन॥तृतीकुं व॥योगिनीशिखाजजमानस्वस्नास्यतानिधुनके॥प

११

रशेषज्येष्ठक्रमनविये॥सकलपरिवारजनकावियेधुनेओदिये॥दिक्कदीपगोडाविये॥
 रुनंचक्रयाय॥मण्डलयाहुविये॥प्रथमलुलु॥द्वितीयच्छाच्छावोवो॥तृतीयशेषर॥धु
 न्यओदिये॥दिक्कफलपकान्न॥रुनंचक्रयाय॥प्रथमगुयाला॥द्वितीयदवगु॥तृतीयउ
 क्रिपुपंला॥धुलिधुन्यओ॥इच्छापात्रमालकधुनकायोगिनीस्तंविये॥कालिकालिमहा
 कालिमांसशोणितभोजनि॥चक्रमेतत्कृतं कर्म क्षमस्ववरदानव॥योगियाधुनकाय
 मनकाय॥जजमानप्रतिष्ठा॥संग्रामेशोगत्रोःप्रतिहितसमयेराजधानीगतोवा॥ना
 नाशस्त्रांगदीर्घविपिनगहनगोनागमलूकदीर्घाः॥सिंहवाघादिभीतःकुलिशप
 वनयोर्वैगवित्रस्तवेताजेतास्तांसर्वसिद्धिं गमयतुपरमायागपूजाविधानात्॥विये

धुलिधुनका॥ जजमानं शिखानाथ यथाविये॥ अनायासा विद्याय मायिने गतमायिने॥
अनूपायोरुनूपायशिवाय गुरवे नमः॥ ध्वनं लियोगिनी तं विये॥ अखिलनुवननूपा
यापिनी चक्रमध्ये कुलवृषपरमाख्यायोगिनी योगिवंश्या॥ अनुयमललितासायोः
गिनी वीरकर्म पुनिरुते जनिता घनं च नरायं निरुते॥ भुगुथासयोगिनी तं वस्त्रालंका १२
रदक्षिणा विये॥ यजमान यजमानीनां मंत्रपदानदीक्षासांगता सिद्धार्थकुलकुंभकौ
मारीयागार्चनचक्रसंपूर्ण निमित्तार्थयोगिनी देव्यथाशक्तिदक्षिणा लंकारवासां
सिसंपुददे॥ धुलिधुनका शिखाया लाहाननपात्रकाय॥ वस्त्रालंकारदक्षिणा॥ वाक्य
रूपायाथा॥ आचार्यस्तं वस्त्रालंकारदक्षिणा॥ धुलिधुनका॥ कुंभयासमयसकस्तविये

सद्वप

जयत्रिकाय डये॥ पात्राष्टतसेवा॥ सकलस्त्रो आज्ञाकाये॥ पात्रजलविये॥ गंगापुष्करन
र्मदासयमुनागोडावरी गोमतीपुण्यस्थानगयापुयागवदरी गोराणासीसिंधुषु॥ व
स्यं नैति सरस्वती भगवती वस्त्राण्डनाण्डादरे तीर्थस्नानसरुत्रकोटिफलदं श्रीपा
त्रयानोदकं॥ कपालसपात्राबोमुखयाय॥ वेदः॥ ॐ हंसः अविषद्वसुरंतरिक्ष ० सद्योः
तावेदिषदतिथिर्दुरीणसदृषद्वरसद्वतद्योमंजागोजाअतजाअदिजाअनं वरुतु॥ ॥
३ त्रयोमलि कपालसत्वेवरीमुडा ज्ञाय॥ ककायावासकपुयातये॥ अंगुष्ठनधकययाया॥ कौरीस
किगोतागत्वनककाय॥ कुंभसंस्नानककाये॥ स्नानविये॥ वलिथीय॥ कौमारी विसर्जन॥
सर्वमंगलमांगल्यसिंवेसर्वाथसाधिके॥ शरण्ये आम्बिके गोरि नारायणि नमोस्तुते॥ ३

कौमारीदेवीस्वस्थानवासाभवतु॥साक्षिथाया॥कौमारीतयकलहोय॥शुशुथासकांश्य
 पात्रदानयाय॥कासलोलासअलितया॥छगोलसअर्द्धपाकतये॥अलितलुरतिअतय
 ॥दिखामोहंगोशकंशखोलजोनके॥जवनअलि॥खवनअर्द्धपाक॥गुरुपूजानवात्म
 मूलन॥त्रयांजलिषडंग॥कोलाजोनकातये॥वाक्य॥वारुणाहेमगर्भत्वलितरसयु
 तंकाश्यपात्रद्वयंचदत्वात्स्वच्छन्दमूर्तौपरशिवदयिताप्रीतयेप्रीतयेताः॥नाथ३
 श्रीनाथशंभोभवन्पुशमनंदद्वितेत्वंगृहाण यदत्वातीर्थकोटिप्रतिदिनयजः
 नात्युण्यमाप्नोतिसत्यं॥अश्वदानसहस्रेण वीधेनुदानशतैरपि॥वीराणां पात्रदानेन
 सामान्यंनैतिवैफल्यं॥तस्माच्छुशुनाथाय कांश्यपात्रंसमर्पितं॥अनेनदानविधिर्न
 धायतां गुरुदेवता॥लवहूय॥गुरुनवेदपडपाकाय॥३॥कोदात्कस्मादात्कामोदात्कामोदा

१३

कामायादान

स२१

नाकामःप्रतिगृहीताकामैतत्तेसोमैकामःसमृद्धते॥गुरुयालाहातसलवहूय॥अनेनदानेन
 भगवान्महेश्वरःप्रीयतां॥अथवीरभोज्यां॥भोज्यधुनकाव॥गुरुसलवाने॥ ॥धनेपुत्र्य
 रंनः॥चतुर्थीकुङ्कुपंचोपचारपूजा॥आयमाल॥गुरुसयकुङ्कुगुरुयातुतिबुकेमाल॥ ॥
 गुप्तंनस्यंताजगुनपुष्टपुसासंवतजुले ब्रह्माबुद्धीराजंभुगुसफलचोत्पंतयधुने॥खिडुंला
 संकार्तिर्महिमाससयार्थंनतिनती॥६॥उं॥विक्रंजानीजनपुनिसनंमायदयका॥
 विलस्यंकेनैवालिकसकसमेमासिवजुलेतथोजेपक्षीसावनलतिधिजातेदुहिणने॥शिवेयो
 गेवाडेहृनिसवितरिस्वाहिसुगतेविधौसंस्थेराशावनडहिसमालेखिसुजनः॥ ६ ६ ॥

